AMOGHVARTA

ISSN : 2583-3189

शिक्षा में बस्ताविहीन शालाः एक नई क्रांति

ORIGINAL ARTICLE

Authors
कीर्ति साहू
एम.एड. प्रशिक्षार्थी

डॉ. अर्चना वर्मा
सहायक प्राध्यापक
शासकीय शिक्षक शिक्षा महाविद्यालय
शंकर नगर, रायपुर, छतीसगढ़, भारत

शोध सार

वर्तमान शिक्षा में बच्चों के बस्ते का बोझ एक गंभीर समस्या है, जो बच्चों के शारीरिक, मानसिक और बौद्धिक विकास पर नकारात्मक प्रभाव डालता है। बस्ताविहीन शाला बच्चों को उनके रोजमर्रा के शैक्षणिक कार्यों से हटाकर रचनात्मक और व्यावहारिक अनुभव प्रदान करने का एक अभिनव प्रयास है। इसका उद्देश्य बच्चों के मानसिक तनाव को कम करना और उनकी रचनात्मकता को प्रोत्साहित करना है। इस दिन बच्चे खेल, कला, कहानी सुनने और पर्यावरण आधारित गतिविधियों में भाग लेते है, ताकि उनमें सांस्कृतिक, साहित्यिक एवं व्यावहारिक विषयों से संबंधित कौशलों का विकास हो सके। यह बच्चों को एक ऐसा मंच प्रदान करता है, जहाँ वे अपनी क्षमताओं का अन्वेषण कर सकते है। इसके अतिरिक्त यह न केवल उनके सीखने के अनुभव को रोचक बनाता है, बल्कि उन्हें जीवन कौशल भी सिखाता है। बस्ताविहीन शाला की यह अवधारणा बच्चों की समग्र शिक्षा के लिए एक सकारात्मक कदम है। इस लेख के माध्यम से बस्ताविहीन शाला की वर्तमान शिक्षा पद्धति में प्रासंगिकता को प्रमुखता से उभारने का प्रयास किया जा रहा है।

मुख्य शब्द

शिक्षा, बस्ताविहीन शाला, नई क्रांति, नवाचारी शिक्षा, सृजनात्मकता.

परिचय

"नन्हें बच्चों को आप हमेशा मुस्कुराते हुए पाते हैं। किंतु जब वे कंधों पर बस्ता ढोते हुए प्राइमरी स्कूल जाने लगते हैं, तब उनकी मुस्कुराहट कम हो जाती है। जब वे सेकेण्डरी स्कूल में पहुँचते है तो उनकी मुस्कुराहट गायब ही हो जाती हैं।

— *डॉ. ए.पी.जे.अब्दुल कलाम*

"मम्मी—पापा मुझे स्कूल नहीं जाना। मैडम रोज दिनभर पढ़ाती रहती हैं। मुझे अपने दोस्तों के साथ मन भर कर खेलने का मौका नहीं मिलता। स्कूल में मुझे मजा नहीं आता।"

ये शिकायत अक्सर बच्चे अपने माता—पिता से करते है, विशेष रूप से छोटे बच्चे। रोते—बिलखते बच्चों को घसीटते हुए अभिभावकों व पालकों द्वारा उन्हें स्कूल ले जाया जा रहा है, ऐसा दृश्य भी यदा—कदा देखने मिल जाया करता हैं। क्या कभी ऐसा भी हो सकता है कि, बच्चे स्वेच्छा से प्रसन्नचित् होकर स्कूल जाने के लिए आतुर हो। इस कल्पना को साकार रूप देने में "बस्ताविहीन शाला" की संकल्पना ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। बस्ताविहीन

शाला ने बच्चों, शिक्षकों, अभिभावकों के दृष्टिकोण में क्रांतिकारी परिवर्तन लाया है, इसके साथ ही विद्यालय के वातावरण और शैक्षिक स्तर के सुधार में भी अपना अमूल्य योगदान दिया है।

उद्देश्य

- बस्ताविहीन शाला की वर्तमान शिक्षा पद्धति में उपयोगिता को जानना।
- बस्ताविहीन शाला को लेकर बच्चों, शिक्षकों व पालकों के दृष्टिकोण को समझना।

संबंधित साहित्य का अध्ययन

झा, कविता ने अपने शोध "प्राथमिक स्तर के छात्र–छात्राओं का बस्ते के बोझ के संदर्भ में समसामयिक अध्ययन" में पाया कि पाठ्यक्रम की अधिकता के कारण बच्चे तनाव, थकान, भय एवं हीनता से ग्रसित होकर निर्धारित समय में पाठ्यक्रम की सभी इकाइयों को नहीं सीख पाते हैं । पाठ्यक्रम एवं शिक्षण व्यवस्था में मनोवैज्ञानिक विधि का क्रियान्वयन विशेष रूप से हो, जिससे विद्यार्थी अधिगम प्रक्रिया में थकावट महसूस न करें। उनके विषय–वस्तु ग्रहण क्षमता में वृद्धि हो और शिक्षण में बस्ते के बोझ में कमी हो।

सिंह, विभा (2011) ने अपने शोध विषय "महात्मा गाँधी की बुनियादी शिक्षा प्रणाली के वर्तमान व्यवसायिक शिक्षा के संदर्भ में प्रासंगिकता के अध्ययन" में पाया कि बुनियादी शिक्षा के माध्यम से बालक अपने शारीरिक, मानसिक, आध्यात्मिक एवं चारित्रिक गुणों का विकास करता है । महात्मा गाँधी के शिक्षा संबंधी विचार आज भी प्रासंगिक है।

राना, रूचि–यादव, पुष्पेन्द्र (2020) ने अपने शोध शीर्षक "खिलौना स्वीकृत शिक्षा शास्त्र प्राथमिक स्तर पर सकारात्मक गणितीय विश्वास विकसित करने में मदद करता है" के अध्ययन में पाया कि खिलौना एकीकृत शिक्षा–शास्त्र का उपयोग करने से छात्रों की गैर लाभकारी मान्यताओं को सकारात्मक तरीके से सुधार सकते है और खिलौना एकीकृत शिक्षा–शास्त्र भविष्य में एक महत्वपूर्ण उपकरण बन सकता है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के तहत केंद्रीय शिक्षा मंत्रालय ने प्रत्येक शाला के लिए वार्षिक कैलेंडर में कक्षा 6 से 8 तक के बच्चों के लिए 10 दिवसीय बस्ताविहीन शाला की अवधारणा प्रस्तुत की है जो वस्तुतः महात्मा गाँधी की 'नई तालीम' और प्रो. यशपाल के 'बोझ रहित शिक्षा' के विचारों को विस्तार प्रदान कर रहें हैं ऐसा प्रतीत होता है, जिसका उद्देश्य कम से कम 50 प्रतिशत छात्रों को व्यावसायिक शिक्षा व व्यावहारिक कौशल प्रशिक्षण प्रदान करना है। इसके परिपालन में सभी सरकारी, सहायता प्राप्त तथा निजी विद्यालयों को स्पष्ट रूप से निर्देशित किया गया है कि, इन 10 दिवसों को 5–5 दिनों के प्रशिक्षण कार्यक्रम के रूप में मनाया जाए। कुछ राज्यों में प्रतिमाह के अंतिम शनिवार को बैगलेस दिवस का आयोजन किया जा रहा है। NEP 2020 के दिशा–निर्देशों में कहा गया है कि, "औसतन, शिक्षक और बच्चे प्रतिदिन लगभग 6 घंटे और वर्ष में 1000 घंटे से अधिक समय स्कूल में बिताते हैं। इस कार्यक्रम की गतिविधियों के लिए स्कूल के न्यूनतम 10 दिन या 60 घंटे का समय आबंटित किया जाना चाहिए।" शिक्षा मंत्रालय के अनुसार, स्कूल बैग का वजन बच्चे के वजन के 10 प्रतिशत से अधिक नहीं होना चाहिए।

भोपाल स्थित PSS Central Institute of Vocational Education ने बैगलेस डे के लिए दिशा–निर्देशों को परिष्कृत करने के लिए कई राज्यों के स्कूलों में पायलट प्रोजेक्ट चलाया, जिससे यह पता चला कि बैगलेस दिवस का व्यावसायिक कौशल सीखने में छात्रों की रूचि पर सकारात्मक प्रभाव पड़ा है। बैगलेस डे के पाठ्यक्रम को तीन विषयों में विभाजित किया गया है:

- विज्ञान, पर्यावरण और तकनीक के पहलुओं का परिचय।
- सार्वजनिक कार्यालय, स्थानीय उद्योग और व्यापार से संपर्क।
- कला, संस्कृति और इतिहास।

इन विषयों से स्पष्ट है कि बच्चों को काम की दुनिया के लिए तैयार करने के लिए तथा काम केंद्रित शिक्षण पद्धति को बढ़ती जटिलता के साथ अपनाने के लिए उन्हें कक्षा की बाहर की दुनिया से परिचित करवाना अतिआवश्यक है।

जुलाई 2019 को आंध्रप्रदेश में पहले और तीसरे शनिवार को सभी प्राथमिक कक्षाओं में 'नो बैग डे' तत्काल प्रभाव से लागू करने आदेश जारी किए गए, जो सभी सरकारी और निजी स्कूलों के लिए अनिवार्य है। राजस्थान में हर दूसरे और चौथे शनिवार को छात्रों को बैग रहित क्लास मिलेगी। राज्य की सरकार ने 'जॉयफुल सैटरडे' नामक पहल शुरू की जिसके तहत रोचक गतिविधियों का आयोजन किया जाएगा। इसके लिए उपयोगी सामग्री के खरीदी के लिए प्रति विद्यालय 1000 रूपये का प्रावधान किया गया है। कर्नाटक के उडुपी जिले में 2018 से यह योजना संचालित की जा रही है।

22 अक्टूबर 2024 को शिक्षा निदेशालय के द्वारा दिल्ली के सभी सरकारी, सहायता प्राप्त व निजी विद्यालयों के लिए राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान प्रशिक्षण परिषद् के माध्यम से दिशा–निर्देश जारी किए गए जिसमें 10 दिवसीय बस्ताविहीन शाला की अवधारणा लागू किए जाने की अनुशंसा प्रस्तुत की गई। इसका उद्देश्य विद्यार्थियों को विभिन्न कौशलों से परिचित कराना और उन्हें अवसर प्रदान करना है। यह सैद्धांतिक शिक्षा और ज्ञान के व्यावहारिक अनुप्रयोग के बीच की खाई को पाटता है। पाठ्यपुस्तकों की सीमाओं से बाहर निकलकर व्यावहारिक दक्षता, प्राकृतिक अन्वेषण, प्रयोग, फील्ड विजिट, शैक्षिक भ्रमण, सर्वेक्षण व साक्षात्कार, ऐतिहासिक स्मारकों, सांस्कृतिक व पर्यटन स्थलों, शिल्प केन्द्रों आदि के माध्यम से यथार्थ जीवन की वास्तविक शिक्षा का प्रबंध बस्ताविहीन शाला के माध्यम से किया जा सकता है।

शिक्षा निदेशालय के अनुसार बस्ताविहीन शाला की खूबसूरती यह है कि, यह सभी 3H- अर्थात् Head, Hand, Heart का उपयोग कर अनुभवात्मक गतिविधियों के माध्यम से सभी छात्रों को सीखने का अवसर प्रदान करती है। इससे कम उम्र में ही छात्रों को आवश्यक व्यावसायिक दक्षताओं से लैस करके करियर विकल्प के चयन में उन्हें सक्षम बनाया जा सकता है। जहाँ एक ओर व्यावसायिक विशेषज्ञों जैसे– बढ़ई, माली, कुम्हार, मिस्त्री आदि स्थानीय कलाकारों और शिल्पकारों के कार्य शैली को करीब से देखने का मौका मिलता है, वहीं दूसरी ओर महत्वपूर्ण ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और पर्यटन स्थलों का प्रत्यक्षीकरण सबसे पृथक अनुभव उपलब्ध कराता है। इससे स्थानीय ज्ञान, पारंपरिक कौशल, मूल्य विकास और बहुकौशल निर्माण आधारित दृष्टिकोण को बढ़ावा मिलता है तथा इसका छात्रों में हस्तांतरण व संक्रमण यथेष्ठ रूप में संभव हो पाता है।

एक बचपन का जमाना था, जिसमें खुशियों का खजाना था,

चाहत चाँद को पाने की थी, पर दिल तितलियों का दीवाना था।

देहरादून में प्रदेश के सभी विद्यालयों में सम्पूर्ण शैक्षिक सत्र हेतु 10 दिवसीय बस्ताविहीन शाला का हर माह के अंतिम शनिवार को कक्षा–6 से कक्षा–12 तक के बच्चों के लिए संचालित किया जाएगा। यह योजना समस्त प्राथमिक शालाओं के लिए पहले से ही 'प्रतिभा दिवस' के रूप आयोजित की जा रही है जो मुख्य रूप से 3 प्रकार के कार्यों पर आधारित हैं। जिसमें पहला जैविक रूप, दूसरा मशीन व सामग्री तथा तीसरा मानवीय सेवाएँ शामिल हैं। जैविक रूप की गतिविधियों में मृदा प्रबंधन, प्रकृति अनुकूल कृषि, बागबानी, पशुपालन, नर्सरी प्रबंधन की पद्धतियाँ सिखाई जाएगी। मशीन और सामग्री के अंतर्गत कागज, लकड़ी, मिट्टी, कपड़ा–सिलाई, बुनकर, कारपेंटर, स्थानीय कला, वेल्डिंग व कास्टिंग, हस्तशिल्प तथा रोबोटिक मशीन का प्रशिक्षण दिया जाएगा, वहीं मानवीय सेवाओं के लिए कुशल संवाद, स्वास्थ्य देखभाल, बिजली का काम, सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी, आतिथ्य व पर्यटन के साथ–साथ तकनीकी कौशल का प्रशिक्षण भी दिया जाएगा।

जमशेदपुर में बागबानी, हेयर स्टाइल, स्कीन केयर, कारपेंटरी के लिए बाकायदा इन कौशलों के प्रोफेशनल बच्चों को प्रशिक्षित करेंगे। अब स्कूलों में घरेलू कौशल सिखाने की कवायद भी की जा रही है। बस्ताविहीन शाला में शामिल होने के भी विद्यार्थियों को इंटरनल अंक प्रदान किए जाऐंगे।

मुंबई में बस्ताविहीन शाला पहल 'हैप्पी सैटरडे' कार्यक्रम के अतिरिक्त है, जिसमें बच्चों को पढ़ाई के स्थान पर खेल और मनोरंजक गतिविधियों में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करने की सलाह दी जाती है। इसके अलावा व्यावसायिक शिक्षा में व्यावहारिक अनुभव प्रदान करना भी मुख्य उद्देश्य है।

बिहार में बस्ताविहीन शाला के लिए सम्पूर्ण सत्र में आयोजित की जाने वाली रूपरेखा व्यवस्थित रूप से निर्धारित की गई है, जिसे 'बैगलेस सुरक्षित शनिवार' उपनाम दिया गया है तथा इसका स्लोगन वाक्य "हर शनिवार एक रोचक नवाचार" रखा गया है। बैगलेस सुरक्षित शनिवार के तहत संचालित 120 गतिविधियों को 12 क्षेत्रों के अंतर्गत विभाजित किया गया है। प्रत्येक माह के लिए एक–एक क्षेत्र आबंटित किया गया है। इस प्रकार यह सभी गतिविधियाँ समग्र प्रगति पत्रक के सह–शैक्षिक भाग का एक अभिन्न अंग होगी।

"खुशियों भरा शनिवार, सुरक्षित शनिवार। हम सीखें हर शनिवार, एक रोचक नवाचार।"

इसी तर्ज पर जुलाई 2022 में छत्तीसगढ़ स्कूल शिक्षा विभाग द्वारा कक्षा 1 से 8 तक के बच्चों के लिए अनिवार्य रूप से प्रत्येक शनिवार को "बस्ताविहीन शाला" के रूप में मनाने की घोषणा की गई। अब हर शनिवार को बच्चे बस्ते के बोझ के बिना स्कूल जाऐंगे जहाँ सुबह योगाभ्यास, व्यायाम, के बाद क्रीडा, साहित्यिक–सांस्कृतिक गतिविधियाँ, मूल्य शिक्षा, कला शिक्षा, बाल–पत्रिका, पुस्कालय उपयोग और व्यावहारिक शिक्षा प्रदान की जाएगी। यह सभी छात्रों, शिक्षकों व पालकों के लिए शिक्षा का नया स्वरूप लेकर आया है। चूँकि शिक्षा का उद्देश्य बच्चों के संज्ञानात्मक व सह–संज्ञानात्मक दोनों क्षेत्रों का सर्वोत्तम विकास करना है, इसलिए इस दिशा में शिक्षा में एक नई क्रांति के रूप मे बस्ताविहीन शाला को देखा जा सकता है।

वर्तमान शिक्षा में बस्ताविहीन शाला की माँग के कारण

आज की शिक्षा पद्धति का मुख्य ध्येय बन गया है, एक अच्छी नौकरी, एक ऊँचे ओहदे, और एक प्रतिष्ठित पद को प्राप्त करना। बच्चा इस योग्य बन जाए कि वह, भविष्य में उस मुकाम को हासिल करे जिसमें उसे अच्छी तनख्वाह मिले, लोग उसका सम्मान करें और दुनिया उसे सलाम करें।

इसके लिए बचपन से ही बच्चों पर पढ़ाई का ऐसा दबाव बनाया जा रहा है, जिसमें उसका बचपन किताबों के नीचे कहीं दब सा गया है। बच्चों के उम्र व क्षमता से अधिक जटिल पाठ्यक्रम सामग्री, घंटों भर की मशक्कत

से पूर्ण किए जाने वाले गृहकार्य, सबसे आगे निकलने की होड़, सबसे बेहतर प्रदर्शन की प्रतिस्पर्धा, उनके भविष्य को लेकर पालकों की चिंता और पालकों द्वारा बच्चों पर पढ़ाई का अतिरिक्त दबाव ऐसे बहुत से कारण है, जो बच्चों को शैक्षिक–मानसिक तनाव से ग्रसित कर रहे हैं। इन सबके चलते उन्हें अपनी वजन व उम्र से अधिक बस्ते का बोझ उठाना पढ़ रहा है।

द न्यूज मिनट की एक रिपोर्ट के अनुसार 2015 में महाराष्ट्र सरकार द्वारा नियुक्त समिति ने बॉम्बे उच्च न्यायालय को एक रिपोर्ट सौंपी, जिसमें बताया गया कि 10 वर्ष से कम आयु के 58 प्रतिशत से अधिक स्कूली छात्र भारी स्कूल बैग उठाने के कारण आर्थोपेडिक बीमारियों से पीड़ित हैं। यह हमारे नौनिहालों के शारीरिक क्षति को इंगित करने वाला एक गंभीर व चिंतनीय तथ्य है। बस्ताविहीन शाला की आवश्यकता के बारे में इस लिहाज से भी सोचा जा सकता है कि कम से कम एक दिन तो बच्चों को इस बोझ से मुक्ति मिल रही है।

रही बात दबाव कि यह केवल छात्रों पर या पालकों पर ही नहीं अपितु शिक्षकों पर भी है। शिक्षकों पर पाठ्यक्रम पूरा करवाने, बच्चों को शैक्षिक रूप से उनके स्तर अनुसार योग्य बनाने की जिम्मेदारी होती है। शालाओं में शिक्षकों की अपर्याप्त संख्या इस बोझ व जवाबदारी को और अधिक बढ़ा देती है जिसके कारण उसका पूरा ध्यान केवल पढ़ाई तक ही सीमित हो जाता है और तब अन्य गतिविधियों के लिए पर्याप्त समय का प्रबंधन करना कठिन कार्य हो जाता हैं।

इन परिस्थितियों में सीखने का वातावरण सुखद व आनंदमय कैसे बनाया जाए? यह एक बड़ा प्रश्न है।

शिक्षा में बस्ताविहीन शाला की भूमिका

बाल मनोविज्ञान और व्यक्तिगत भिन्नता

हर बच्चा अद्वितीय होता है, और उसकी मानसिकता, सीखने का तरीका, और अनुभव भी अलग होता है। व्यक्तिगत भिन्नता से तात्पर्य बच्चों में मौजूद मानसिक, शारीरिक, भावनात्मक, और व्यावहारिक अंतर से है। इसे समझना बाल मनोविज्ञान का ही एक हिस्सा है, जो शिक्षकों, अभिभावकों और मनोवैज्ञानिकों को बच्चों के लिए प्रभावी रणनीतियाँ बनाने में मदद करता है।

"शिक्षा वह है जो स्कूल में सीखी गई बातों को भूल जाने के बाद भी बची रहती है।"

– अल्बर्ट आइंस्टीन

नेतात्व की क्षमता का विकास

बस्ताविहीन शाला शिक्षक–छात्र दोनों को ही नेतृत्व का अवसर प्रदान करता है। यह विभिन्न गतिविधियों के माध्यम से उनके आत्मविश्वास एवं आत्मबल के वृद्धि में सहायक है।

वित्त–पोषण एवं भौतिक संसाधन का उपयोग

प्रत्येक शाला को बच्चों की शिक्षा व मनोरंजन के लिए विभिन्न संसाधन उपलब्ध करवाए जाते है, जिसका प्रयोग सांस्कृतिक, साहित्यिक एवं क्रीडा संबंधित गतिविधियों के लिए किया जाता है। सांस्कृतिक गतिविधियों के लिए तबला, पेटी, झांझ–मंजीरा, हारमोनियम, ढफली, घूँघरूँ आदि सामग्री प्रदान की जाती है वही खेलकूद के लिए इंडोर–आउटडोर गेम्स के साधन जैसे– कैरम, साँप–सीढ़ी, लूडो, पासा, शतरंज, खिलौने, बॉलीबॉल, फुटबॉल, रिंग, रस्सी, बैट–बॉल, बैडमिंटन आदि शालाओं में मौजूद होते है, परंतु इसके सदुपयोग का अवसर बहुत ही कम मिल पाता हैं। ऐसे में बस्ताविहीन शाला का यह मंच अत्यंत उपयोगी है।

सहकर्मियों द्वारा प्रोत्साहन

सह–शैक्षिक गतिविधियों में संस्था प्रमुख से लेकर संस्था के प्रत्येक सदस्य का सहयोग प्राप्त होता है। उनके द्वारा मिलने वाला प्रोत्साहन नई ऊर्जा का संचार करता हैं। इन सबकी सहभागिता कार्य को सरल व सहज बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

स्वयं के गुण–दोष को जानने का अवसर

विभिन्न गतिविधियों के दौरान हमें अपने (शिक्षक) एवं छात्रों के गुण–दोष को जानने का अवसर मिलता है। अपनी कमियों में सुधार करने एवं अपने गुणों के विकास की ओर अग्रसर होने की प्रेरणा मिलती है।

नवाचार

प्रत्येक शनिवार को कुछ नया करने एवं नए अनुभव प्राप्त करने की ललक जागृत होती है। आज "कुछ हट कर करते है", "कुछ नया सीखते हैं" की भावना सहज रूप में विकसित होती हैं।

शैक्षिक व सह–शैक्षिक गतिविधियाँ

पढ़ाई के साथ–साथ कला, साहित्यिक, सांस्कृतिक एवं व्यावहारिक कौशलात्मक गतिविधियों के माध्यम से बच्चों के सह–संज्ञानात्मक क्षेत्र का विकास होता है। कलात्मक क्षेत्र के लिए मिट्टी से मूर्ति बनाना, खिलौने बनाना, लोकशिल्प कागज के फूल, नाव, सजावटी सामान, छिंद–बाँस से चटाई, फूल–फूलदान बनाना, चित्रकला, पेंटिंग, मेंहदी–डिजाइन, रंगोली, गुलदस्ता बनाना आदि गतिविधि शामिल है वही साहित्यिक गतिविधियों में गीत, कविता, कहानी, नाटक, संवाद, वाद–विवाद, निबंध–लेखन, सुलेखन, भाषण, लोकगीत, लोकनृत्य की प्रस्तुति करवाई जाती है। इसके अलावा क्षेत्र–भ्रमण, आस–पास के फल–फूल, सब्जियों का संग्रहण आदि व्यावहारिक कौशलात्मक अनुभव प्राप्त करने के अवसर दिए जाते हैं।

कागज की कश्ती थी, पानी का किनारा था, खेलने की मस्ती थी, ये दिल आवारा था।
कहाँ आ गए इस समझदारी के दलदल में, वो नादान बचपन ही कितना प्यारा था।

ICT का प्रयोग

आज का युग ICT का युग है। शिक्षा जगत भी इससे अछूता नहीं है। नवाचारी, रोचक व उपयोगी गतिविधियों को व्हाट्सऐप्प, वीडियो स्टेटस के माध्यम से विभिन्न क्षेत्रों के बच्चों व शिक्षकों तक आसानी से पहुँचाया जा सकता है। इससे शिक्षा को सरल व सहज बनाने में मदद मिलती है।

अन्य शिक्षकों व छात्रों को प्रेरित करना

इस तरह की गतिविधियों को देखकर अन्य क्षेत्रों के शिक्षक भी प्रभावित व आकर्षित होते है और वे भी नवाचार करने के लिए प्रेरित होते है।

कमजोर बच्चों को आगे बढ़ने को अवसर देना

अक्सर पढ़ाई के होड़ में शिक्षक कमजोर बच्चों को अधिक समय नहीं दे पाते। उनके गुणों की ओर ध्यान देने, उसे पहचानने, जानने, समझने के अवसर नहीं मिल पाते, परंतु बस्ताविहीन शाला में कमजोर व पिछड़े बच्चों को आगे आने, अपने गुणों को प्रकट करने का अवसर मिलता है जिससे उनके आत्मविश्वास में वृद्धि होती है। यह उनके औपचारिक शिक्षा के लिए भी रामबाण की तरह साबित होता है। इससे उन्हें आगे बढ़ने और पढ़ाई में भी अच्छा करने की प्रेरणा मिलती है।

"अच्छे शिक्षक वे होते है, जो हमें खुद के बारे में सोचना सिखाते हैं।"

– डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन

प्रतिभा की खोज

हर बच्चा स्वयं में खास होता है, सब में अलग–अलग प्रतिभा होती है। कोई खेल में अच्छा होता है, कोई पढ़ाई में, कोई गायन में या कोई नृत्य में। सबमें कुछ न कुछ विशेष कला होती है। जरूरी नहीं है कि जो बच्चा पढ़ाई में अच्छा है, वह सब विधाओं में भी अच्छा हो और यह भी जरूरी नहीं कि जो बच्चा पढ़ाई में अच्छा नहीं है, वह और कुछ कर ही नहीं सकता। इस धारणा को बदलने की आवश्यकता है, जो बस्ताविहीन शाला के द्वारा संभव हो सकता है।

"किसी बच्चे को प्रतिभाशाली और प्रतिभावान बनाने का कारण हमेशा स्कूल में अच्छे ग्रेड नहीं होते, बल्कि दुनिया को देखने और सीखने का एक अलग नजरिया होता है।" – *चक ग्रासली*

शारीरिक, मानसिक व बौद्धिक विकास

खेलकूद, सांस्कृतिक, साहित्यिक, सामाजिक व व्यावसायिक प्रशिक्षण से बच्चों का शारीरिक, मानसिक व बौद्धिक विकास किया जा सकता है।

कौशल विकास व व्यावसायिक दक्षता

आस–पास के क्षेत्रों में उपलब्ध शिल्पकारों, कामगारों, कृषकों, विभिन्न व्यावसाय से जुड़े लोगों से संपर्क कर व्यावहारिक कौशल प्रशिक्षण प्राप्त किया जा सकता है। इस कार्य में शिक्षक व पालकों की सहभागिता भी अहम भूमिका निभाती है।

"शिक्षा एक व्यक्ति को अनगिनत संभावनाओं की ओर बढ़ने की अनुमति देती है।"

– *स्वामी विवेकानंद*

भय के वातावरण से मुक्ति

बच्चे सप्ताह के 5 दिन पढ़ाई और होमवर्क के दबाव में रहते है परंतु शनिवार के दिन वे इन सबके भय से मुक्त होकर स्कूल आते है और स्वयं को जानने का प्रयास करते है। ऐसे में विद्यालय के अनुशासनात्मक वातावरण में भी उन्हें खुलकर अपने बचपन को जीने और उसे महसूस करने का मौका मिलता है।

"बच्चों को शिक्षित करना होगा, लेकिन उन्हें स्वयं से शिक्षित होने के लिए भी छोड़ देना होगा।"

– *अर्नेस्ट डिमनेट*

शिक्षक–छात्र व छात्र–छात्र मधुर संबंध

सह–शैक्षिक गतिविधियों में शिक्षक–छात्र व छात्र–छात्र संबंध मधुर व मजबूत बनता है। वे एक–दूसरे से बेझिझक अपनी बात कह पाने में सहज हो पाते है। मैत्रीपूर्ण और सहयोगी वातावरण में भावनाओं का आदान–प्रदान सुगम ढंग से हो पाता है।

स्वतंत्र चिंतन की क्षमता का विकास

"बच्चों को स्वाभाविक और स्वतंत्र माहौल में सीखने का अवसर दिया जाना चाहिए।"

– रवीन्द्रनाथ टैगोर

बच्चे स्वतंत्र व भयमुक्त वातावरण में कल्पनाशील चिंतन–मनन करने में सक्षम होते है और स्वयं के गुणों व क्षमताओं के आधार पर अपने सृजनात्मक व कलात्मक कौशलों का विकास करते है।

"शिक्षा का उद्देश्य खाली दिमाग को खुले दिमाग से बदलना है।"

– मैल्कम फोर्ब्स

रूचिकर एवं आनंददायी वातावरण में सीखने का अनुभव

बस्ताविहीन शाला का वातावरण शिक्षक–छात्र के अलावा पालकों के लिए भी रूचिकर होने के साथ–साथ आनंद के सुखद अनुभव प्रदान करने वाला होता है।

"जो हम खुशी से सीखते हैं, उसे हम कभी नहीं भूलते।" *– अल्फ्रेड मर्सिएर*

बस्ताविहीन शाला के लाभ

- बस्ताविहीन शाला एक स्वर्णिम अवसर है, अपने विद्यालय में रखे हुए भौतिक संसाधनों के सफल व समुचित सदुपयोग का।
- शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार करना हो या विद्यालय के स्तर में सुधार करना हो, इसके लिए संस्था प्रमुख से लेकर प्रत्येक शिक्षक–छात्र, सहकर्मी वर्ग, आसपास के शिक्षक समुदाय, छात्रों के पालकगण, जनसमुदाय, जनप्रतिनिधि तथा अन्य मित्रमंडल सबकी सहभागिता अनिवार्य होती है।
- बस्ताविहीन शाला एक अच्छा अवसर है, अपनी (शिक्षक) की कमियों को जानने का व अपने बच्चों के गुणों को पहचानने का।
- इसके माध्यम से शाला के वित्त–पोषण का बच्चों के आवश्यकताओं के अनुरूप उपयोग किया जा सकता हैं।
- वर्तमान शिक्षा पद्धति में ICT का वृहद् स्तर पर प्रयोग करना स्वाभाविक हो गया है, इसके माध्यम से हो रहे नित–नए नवाचारों से अवगत होने में मदद मिलती है।
- जैसा कि हम सब जानते हैं कि प्रतिभा कभी किसी की मोहताज नहीं होती वह माँगती है, बस एक अवसर। वास्तव में बस्ताविहीन शाला वही अवसर प्रदान करती है।
- बस्ताविहीन शाला एक सर्वोत्तम विकल्प है, बच्चों में सृजनात्मक और कल्पनाशील सोच विकसित करने का।
- शिक्षा में कला का विशेष महत्व है, चाहे वह कोई भी कला हो, क्योंकि कला हमारे बच्चों को खेलने, खुलने, खिलखिलाने और नन्हीं कलियों को खिलने को अवसर देती हैं।

प्रमुख सावधानियाँ

- कक्षा के अंदर व बाहर विभिन्न गतिविधियों के दौरान बच्चों की सुरक्षा का ध्यान रखना अतिआवश्यक है। किसी भी प्रकार के जोखिम व आपदा की स्थिति से निपटने की क्षमता का विकास करना भी बस्ताविहीन शाला कार्यक्रम का एक मुख्य उद्देश्य है।
- सीखने की प्रक्रिया में शिक्षक की प्रतिक्रिया बच्चों के व्यवहार को हमेशा सकारात्मक दिशा की ओर वाली अग्रसर करने वाली होनी चाहिए। नकारात्मक टीका–टिप्पणी करने की अपेक्षा और क्या बेहतर किया जा सकता है इस पर विचार करना अधिक श्रेष्यकर होता है।
- यह आयोजन उन बच्चों के लिए सबसे अधिक महत्व रखता है, जो अक्सर अपने आपको कक्षा में सबसे पीछे पाते हैं और अन्य बच्चों से स्वयं को कम आँकते है। संवेदनशील बच्चों के मनोविज्ञान को समझकर उन्हें आगे बढ़ाने लिए उनमें आत्मविश्वास की भावना जागृत करना किसी चुनौती से कम नहीं।

इस बात का सदैव स्मरण रहना चाहिए कि बस्ताविहीन शाला कार्यक्रम बच्चों के गुणों को निखारने, उनके व्यक्तित्व को संवारने तथा उनकी प्रतिभाओं को सराहने का अवसर है। इसके अलावा यह भी ध्यान रखा जाना चाहिए कि किसी भी कारणवश उनके मनोबल की क्षति न हो।

निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन से स्पष्ट होता है कि बस्ताविहीन शाला शिक्षा से जुड़े विभिन्न पक्षों को उजागर करता है, जिनकी ओर हमारा ध्यान तो जाता है, परंतु उस स्तर तक ध्यान नहीं दिया जाता जितनी की आवश्यकता होती है। यह बच्चों को सीखने के सुखद, सरल, सहज, रूचिकर एवं आनंदमय अनुभव प्रदान करता है। साथ ही साथ शिक्षक और पालक भी अपने बचपन के पूर्वानुभवों से पुनः जुड़कर बाल मनोविज्ञान को समझने को प्रयास करते है। इनसे अक्सर यह सुनने को भी मिल जाया करता हैं कि, अपने बचपन का वो रविवार अब मुझे अपने बच्चों के शनिवार में नजर आता है। इस प्रकार बस्ताविहीन शाला बच्चों के सर्वांगीण विकास में सहायक है, इसमें कोई संदेह नहीं।

"उड़ने दो परिंदों को अभी शोख हवा में,
फिर से बचपन के जमाने नहीं आते।"

संदर्भ सूची

1. 'बैगलेस सुरक्षित शनिवार' वैगल व्हील. राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार. Retrieved from https://www.bepcssa.in/en/dt/Bagless%20Saturday%20Final%20copy%2010-11-22%209%20pm%20white.pdf, Accessed on 27.10.2024.
2. Bagless Day Report 2023. Bal Bharti Public School, Sector 21, Noida, G.B.Nagar. Retrieved from https://bbpsnoida.balbharati.org/wp-content/uploads/2023/10/Report-on-bagless- day-27.09.23.pdf, Accessed on 27.10.2024.
3. Guidelines for implementation of 10 Bagless days in school. PSS Central Institute of Vocational Education, Madhya Pradesh. Retrieved from https://www.psscive.ac.in/storage/uploads/others/Guideline/pdf/english/guideline- for10Baglessdays-in-School%20in%20English.pdf, Accessed on 27.10.2024.
4. झा. के. (2010) प्राथमिक स्तर पर छात्र–छात्राओं का बस्ते के बोझ के संदर्भ में समसामयिक अध्ययन, शासकीय शिक्षक शिक्षा महाविद्यालय, रायपुर (छ.ग.)
5. Jindal, A. Analysis of National Education Policy (2020) Supremo Amicus 20, 65,2020. Retrieved from https://supremoamicus.org/wp-content/uploads/2020/09/A1v20- 9.pdf, Accessed on 27.10.2024.

6. राना, आर.–यादव, पी. (2020) खिलौना स्वीकृत शिक्षा शास्त्र प्राथमिक स्तर पर सकारात्मक गणितीय विश्वास विकसित करने में मदद करता है, शासकीय शिक्षक शिक्षा महाविद्यालय रायपुर, (छ.ग.)
7. राष्ट्रीय शिक्षा नीति (2020) राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली।
8. Policy on School Bag (2020) National Council of Educational Research and Training, New Delhi.
9. Sethy, R. (2021). Perception of teachers on 10 Days Bagless Period for school students of Chilka Block. New Delhi Publishers, 11(2), 1-8. Retrieved from https://ndpublisher.in/admin/issues/TLv11n2i.pdf, Accessed on 27.10.2024.
10. सिंह, व्ही. (2011) गाँधी के बुनियादी शिक्षा प्रणाली के वर्तमान व्यावसायिक शिक्षा के संदर्भ में प्रासंगितकता के अध्ययन, शासकीय शिक्षक शिक्षा महाविद्यालय रायपुर, (छ.ग.)
11. https://nbsenl.edu.in/cms/document/163/notifications, Accessed on 26.10.2024.
12. https://bbpsnoida.balbharati.org/wp-content/uploads/2023/10/Report-on-bagless- day-27.09.23.pdf, Accessed on 26.10.2024.
13. https://ejesm.org/wp-content/uploads/2022/05/ejesm.v15i2.8.pdf, Accessed on 25.10.2024.
14. https://www.thehindu.com/news/national/andhra-pradesh/no-bag-for-children-on-first-third-saturdays-across-the-state/article28740093.ece, Accessed on 27.10.2024.
15. https://www.indiatoday.in/education-today/news/story/no-bag-weekend-students-in-rajasthan-to-have-bag-less-study-on-every-2nd-and-4th-saturday-after-recess-1336610-2018-09-10, Accessed on 25.10.2024.
16. https://www.thehindu.com/news/national/karnataka/bag-less-day-for-schools-in-udupi-district-from-june/article24040246.ece, Accessed on 26.10.2024.
17. https://www.teachersofbihar.org/bagless-saturday, Accessed on 25.10.2024.
18. https://www.jagran.com/delhi/new-delhi-city-ncr-good-news-for-school-children-now-there-will-be-bag-free-studies-for-ten-days-know-what-is-bagless-days-scheme-23820482.html, Accessed on 25.10.2024.
19. https://www.extramarks.com/blogs/nep-bagless-policy/, Accessed on 24.10.2024.
20. https://ravivardelhi.com/bagless-day-scheme-implemented/, Accessed on 25.10.2024.
21. https://www.livehindustan.com/jharkhand/jamshedpur/story-bagless-day-introduced-in-schools-new-education-policy-emphasizes-domestic-skills-201735044660036.html, Accessed on 24.10.2024.
22. https://timesofindia.indiatimes.com/city/mumbai/revolutionizing-education-10-bagless-days-for-indian-school-students/articleshow/114515132.cms, Accessed on 25.10.2024.
23. https://chid.athena.edu.in/2024/04/16/goals-objectives-of-bagless-day/, Accessed on 27.10.2024.
24. https://www.thehindu.com/news/national/ncert-guidelines-provide-10-bagless-days-for-students-of-classes-6-to-8/article68461160.ece, Accessed on 27.10.2024.
25. https://toppersnotes.co/current-affairs/blog/hindi/ncert-proposes-10-bagless-days-a-year-for-students-from-classes-6-to-8-NyRo, Accessed on 26.10.2024.
26. https://www.smilefoundationindia.org/blog/bagless-days-to-reduce-burden-on-children/, Accessed on 24.10.2024.

——==00==——